सामाजिक विज्ञान

कक्षा 6

Chapter 6: भारतीय सभ्यता का प्रारंभ

To get notes visit our website

mukutclasses.in

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

प्रश्न 1. इस अध्याय में अध्ययन की गई सभ्यता के अनेक नाम क्यों हैं? इनके महत्व पर चर्चा कीजिए।
उत्तर:- इस सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता, सिंधु-सरस्वती सभ्यता जैसे नाम दिये। निम्नलिखित कारणों से इस सभ्यता को ये नाम दिए गए हैं-

1. सिंधु घाटी सभ्यता – इसका नाम सिंधु नदी के किनारे स्थित होने के कारण पड़ा। यह नाम इसके भौगोलिक विस्तार को दर्शाता है।
2. हड़प्पा सभ्यता – चूंकि इस सभ्यता का पहला प्रमुख स्थल हड़प्पा था, इसलिए इसे "हड़प्पा सभ्यता" कहा गया। यह नाम इसकी खोज और पहचान को दर्शाता है।
3. सिंधु-सरस्वती सभ्यता – कई पुरातत्वविदों के अनुसार, यह सभ्यता केवल सिंधु ही नहीं बल्कि विलुप्त सरस्वती नदी के किनारे भी विकसित हुई थी। यह नाम उसके व्यापक क्षेत्र को दर्शाता है।

इन नामों का महत्व:

1. ये नाम सभ्यता की भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, इतिहास, और खोज के क्रम को दर्शाते हैं।
2. विभिन्न नामों से हमें सभ्यता की अनेकों विशेषताओं को समझने में मदद मिलती है।
3. इससे पता चलता है कि यह सभ्यता केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव वाली थी।

प्रश्न 2. सिंधु-सरस्वती सभ्यता की उपलब्धियों का सार देते हुए संक्षिप्त रिपोर्ट (150 से 200 शब्द) लिखिए।
उत्तर:-सिंधु-सरस्वती सभ्यता की प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

1. इस सभ्यता के शहर, जैसे हड़प्पा और मोहनजोदड़ो, सुनियोजित ग्रिड प्रणाली पर बने थे।
2. सड़कें सीधी और चौड़ी थीं।
3. घर पक्की ईंटों से बने थे।
4. यहां विश्व की सबसे अच्छी जल निकासी प्रणाली थी, जिसमें पक्की नालियाँ थी।
5. यहां गेहूं, जौ, कपास की खेती होती थी।
6. यहाँ मातृदेवी की पूजा के प्रमाण मिले हैं।

प्रश्न 3. कल्पना कीजिए कि आपको हड़प्पा से कालीबंगा तक यात्रा करनी है। आपके पास विभिन्न विकल्प क्या हैं? क्या आप प्रत्येक विकल्प में लगने वाले समय का अनुमान लगा सकते हैं?
उत्तर:- प्राचीन काल में यात्रा के विकल्प: (सिंधु-सरस्वती सभ्यता के समय की यात्रा के अनुमान)

1. पैदल यात्रा – लगभग 700-800 किमी, समय: 30-40 दिन
2. बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी – समय: 15-20 दिन
3. नदी मार्ग (सिंधु व घग्गर-हकरा नदी के सहारे) – समय: 10-15 दिन

आधुनिक काल में यात्रा के विकल्प:

1. रेल मार्ग (लाहौर-बीकानेर के रास्ते) – समय: 12-15 घंटे
2. सड़क मार्ग (लाहौर-बीकानेर होते हुए) – समय: 10-12 घंटे
3. वायु मार्ग (लाहौर से जयपुर/दिल्ली, फिर सड़क मार्ग) – कुल समय: 6-8 घंटे

निष्कर्ष: प्राचीन काल में यह यात्रा सप्ताहों में होती थी, जबकि आज के आधुनिक साधनों से यह घंटों में पूरी की जा सकती है।

प्रश्न 4. कल्पना कीजिए कि यदि हड़प्पा के किसी पुरुष या महिला को हम आज के भारत के सामान्य रसोईघर में ले आते हैं, तो उन्हें सबसे बड़े चार या पाँच आश्चर्य क्या लगेंगे?
उत्तर:- अगर हड़प्पा सभ्यता का कोई व्यक्ति आज की रसोई में आए, तो उसे ये चीजें सबसे ज्यादा हैरान करेंगी:

1. गैस चूल्हा और इंडक्शन – बिना लकड़ी जलाए खाना पकाना उनके लिए जादू जैसा होगा।
2. स्टील और नॉन-स्टिक बर्तन – मिट्टी या कांसे के बर्तनों के बजाय ऐसे चमकते बर्तन उन्हें चौंका देंगे।
3. फ्रिज और माइक्रोवेव – खाना ठंडा या गर्म रखने की ये मशीनें उनके लिए बिल्कुल नई चीज होंगी।
4. मसाले और पैकेज्ड फूड – तरह-तरह के मसाले और रेडीमेड खाने की चीजें उन्हें बहुत अनोखी लगेंगी।
5. नल और सिंक – नल से अपने आप पानी आना और सिंक में सफाई देखना उनके लिए चमत्कार जैसा होगा।

अत: आज की रसोई हड़प्पावासियों को एक जादुई दुनिया जैसी लगेगी।

प्रश्न 5. इस अध्याय के सभी चित्रों पर दृष्टि डालते हुए उन आभूषणों/हाव-भावों/वस्तुओं की सूची बनाइए, जो अभी भी 21 वीं शताब्दी में परिचित प्रतीत होती हैं।
उत्तर:
1. आभूषण:- कंगन, मंगलसूत्र जैसे गले के हार, बालों में गूंथे मोती या क्लिप जैसे आभूषण, अंगूठियाँ
2. हाव-भाव :- नृत्य, हाथ जोड़ना, सज-धज कर बैठी स्त्रियाँ
3. वस्तुएँ:- कंघी, शीशा, चक्की, सिंदूरदान,बर्तन और मिट्टी के घड़े

प्रश्न 6. धौलावीरा के जलाशयों की प्रणाली क्या सोच प्रतिबिंबित करती है?
उत्तर:- धौलावीरा की जलाशयों की प्रणाली उन्नत इंजीनियरिंग और जल संरक्षण की गहरी समझ को दर्शाती है।
शुष्क क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद, वहाँ के लोगों ने वर्षा जल संचयन और जल प्रबंधन की कुशल तकनीकें अपनाईं।
सुनियोजित वास्तुकला, नहरें, जलाशय और भूमिगत संरचनाएँ सतत विकास और नवाचार की मिसाल हैं।
इस प्रणाली से स्पष्ट होता है कि धौलावीरा के निवासी पर्यावरण के प्रति सचेत थे।
वे तकनीकी रूप से दक्ष और सामूहिक सहयोग में विश्वास रखने वाले थे।

प्रश्न 7. मोहनजोदड़ो में ईंटों से निर्मित 700 कुओं की गणना की गई है। ऐसा लगता है कि उनका नियमित रूप से रख-रखाव किया जाता रहा और अनेक शताब्दियों तक उनका उपयोग किया जाता रहा। निहितार्थों पर चर्चा कीजिए।
उत्तर:- मोहनजोदड़ो में ईंटों से बने करीब 700 कुएँ पाए गए हैं, जो वहाँ के लोगों की जल प्रबंधन की समझ को दिखाते हैं।
1. **अच्छी जल व्यवस्था** – इतनी बड़ी संख्या में कुएँ यह बताते हैं कि लोग पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए पहले से योजना बनाकर काम करते थे।
2. **ज्यादा आबादी** – शहर में बहुत लोग रहते थे, इसलिए हर किसी को पानी मिले, इसके लिए कई कुएँ बनाए गए।
3. **साफ-सफाई का ध्यान** – पानी का इस्तेमाल सिर्फ पीने के लिए नहीं, बल्कि नहाने, सफाई और शायद सार्वजनिक स्नानगृहों में भी होता था।
4. **समाज की ज़िम्मेदारी** – इन कुओं की देखभाल यह दिखाती है कि समाज मिलकर काम करता था और पानी को संभालकर रखता था।
5. **तकनीक में आगे** – पक्की ईंटों से बने ये कुएँ बताते हैं कि मोहनजोदड़ो के लोग निर्माण और तकनीक में बहुत होशियार थे।

MUKUTClasses

प्रश्न 8. सामान्यतः यह कहा जाता है कि हड़प्पावासियों में नागरिकता का उच्च भाव था। इस कथन के महत्व पर चर्चा कीजिए। क्या आप इससे सहमत हैं? वर्तमान भारत के महानगरों के नागरिकों के साथ इसकी तुलना कीजिए।
उत्तर:- इस कथन का महत्व यह है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग बहुत जिम्मेदार और अनुशासित नागरिक थे।
1. उन्होंने अपने शहर को साफ-सुथरा और अच्छी तरह से बसाया।
2. हर घर में नालियाँ, कुएँ और साफ पानी की व्यवस्था थी।
3. वे समाज के लिए सोचते थे, न कि सिर्फ अपने लिए।
4. नियमों का पालन करते थे, इसलिए कोई झगड़े या हिंसा के संकेत नहीं मिलते।

क्या मैं सहमत हूँ?
हाँ, मैं मानता हूँ कि हड़प्पावासी अच्छे और जिम्मेदार नागरिक थे।

आज के महानगरों से तुलना:
1. आज के शहरों में गंदगी, ट्रैफिक और जल संकट आम हैं।
2. कई लोग नियमों का पालन नहीं करते।
3. हर कोई अपने फायदे की सोचता है, समाज की नहीं।

अतः हड़प्पा के लोगों से हमें सीख मिलती है कि एक अच्छा नागरिक होना कितना जरूरी है।